Artistic Narration Vol. XI No. II July-Dec.2020 ISSN (P): 0976-7444 (e): 2395-7247 Impact Factor 7.719 (SJIF)

ईसाई धर्म से सम्प्रक्त यामिनी राय की कला

रजनी बंसल
शोध छात्रा,
चित्रकला विभाग,
आर0जी0 (पी0जी0) कालेज, मेरठ
ईमेलः rajni@75@gmail.com

डा0 अर्चना रानी
विभागाध्यक्ष एवं एसोसिएट प्रोफेसर
चित्रकला विभाग
आर0जी0 (पी0जी0) कालेज, मेरठ
drarchnana.art@gmail.com

Reference to this paper should be made as follows:

रजनी बंसल
डा0 अर्चना रानी

'ईसाई धर्म से सम्प्रक्त यामिनी राय की कला'

Artistic Narration 2020,
Vol. XI, No. II,
Article No. 25 pp. 159-166

https://anubooks.com/artistic-narration-no-xi-no-2-july-dec-2020/

सारांश

बंगाल शैली के चित्रकार यामिनी राय ने पारम्परिक चित्रों से लेकर आधुनिक कला से प्रेरणा लेते हुए धार्मिक, पौराणिक विभिन्न विषयों को अपनी कला का विषय बनाया। यामिनी राय ने ईसा मसीह के चित्रों को भारतीय शैली में बनाया। यामिनी राय एक पाश्चात्य संस्कृति की कहानियों को अपनाने में कितने कौशल थे, उन्होंने एक पाश्चात्य संस्कृति के ईसा को परिचित रूप दिया, जैसे कि वे हमारे गाँव के लोग हों। जीसस क्राइस्ट के जीवन को दर्शाने वाली छवियों की श्रृंखला यामिनी राय के साहसिक प्रयोगों में से एक है। उन्होंने हैड और जीसस, जीसस क्राइस्ट, मैरी एण्ड जीसस, क्राइस्ट विद दा क्रॉस, क्रूसिफिकेशन, क्राइस्ट विद डिस्पाइल्स, लास्ट सपर आदि चित्र बनाये। यामिनी राय के ईसाई धर्म विषयक चित्र मेरे प्रस्तुत शोध पत्र का आधार है।

मुख्य शब्दः *ईसाई धर्म, माँ मेरी, प्रभु यीशु, सादगी, अभिव्यक्ति, चटक रंग योजना, संस्कृति।*

प्रस्तावना

कला सदैव से गतिशील रही है। कला मन की अभिव्यक्ति है। भाशा के अभाव में भी कलाकार कला के माध्यम से अपनी अभिव्यक्ति करता रहा है। प्रागैतिहासिक युग में मानव लिपि के अभाव में भी कलाकार कला के माध्यम से अपनी अभिव्यक्ति करता रहा है। प्रागैतिहासिक युग में मानव लिपि के अभाव में भी चित्रों के माध्यम से अभिव्यक्ति की है। सिंधु घाटी की सभ्यता में कलाकार ने कला के माध्यम से अभिव्यक्ति की है। अजन्ता की गुफाओं में भी बौद्ध धर्म का प्रचार कला के माध्यम से ही किया गया। गुप्त काल में हिन्दू–धर्म के प्रभावस्वरूप स्थापत्य एवं मूर्ति कला में हिन्दू भगवानों को चित्रण सर्वाधिक हुआ। जैन धर्म से प्रभावित भारतीय कला को एलोरा की गुफाओं से लेकर मथुरा शैली तक देखा जा सकता है। मध्यकाल में आये इस्लाम धर्म ने भारतीय कला को प्रभावित किया। अब कला धीरे–धीरे गुफाओं, सभ्यता एवं मन्दिरों से निकलकर राजसी आश्रयों की ओर बढ़ने लगी। भारतीय कला धर्म प्रधान है। सम्पूर्ण प्राचीन भारतीय कला का कार्य धर्म का प्रचार करना रहा। चाहे ब्राह्मण कला हो, बौद्ध कला या जैन कला।[1] हिन्दू, बौद्ध, सिक्ख, मुस्लिम धर्म के साथ–साथ ईसाई धर्म के प्रचार एवं प्रसार में भी भारतीय कलाओं ने महत्वपूर्ण योगदान दिया है। प्राचीन काल से ही कला व धर्म ने एक दूसरे को स्थायित्व प्रदान किया। ऐसा कोई धर्म नहीं रहा जिस पर भारतीय कलाकारों ने अपनी तूलिका न चलायी हो। अतः ईसाई धर्म से सम्प्रक्त यामिनी राय की कला को जानने के लिए ईसाई धर्म का परिचय नितान्त आवष्यक है।

ईसाई धर्म का परिचय

ईसाई धर्म प्राचीन यहूदी परम्परा की कोख से जन्म लेने वाला धर्म है। इसकी शुरुआत लगभग तीस से तैंतीस ई. पूर्व के मध्य हुई। यह संसार में सबसे अधिक माने जाने वाला लचीला धर्म है, जो मानवता को सर्वोच्च मानने वाला एकेश्वरवाद है। इस धर्म के प्रर्वतक ईसा मसीह है उनके अनुयायी ईसाई कहलाते हैं। यह ईसा मसीह की शिक्षाओं पर आधारित है। ईसाई धर्म में तीन प्रमुख सम्प्रदाय है– कैथोलिक, प्रोटेस्टेंट और ऑर्थोडॉक्स। कैथोलिक सम्प्रदाय वाले पोप की सत्ता की सर्वोच्च गुरु मानते हैं। प्रोटेस्टेंट सम्प्रदाय वाले किसी पोप को नहीं मानते। वे पवित्र बाइबिल में आस्था रखते हैं। ऑथोडॉक्स रोम के पोप को नहीं मानते। लेकिन ये राष्ट्रीय धर्म संघ के पैट्रिऑक को मानते हैं। ये परम्परावादी होते हैं। ईसाई धर्म का पवित्र ग्रन्थ बाइबिल है। बाइबिल के दो भाग है।। प्रथम भाग यहूदियों का धर्मग्रन्थ है। बाइबिल के उत्तरार्द्ध में ईसा के चमत्कार, शिष्यों से कायम पवित्र रिश्ता का संकलन है। ईसाई धर्म के पूजाग्रह को चर्च कहते हैं। ईसाई धर्म को मानने वाले ईश्वर को त्रियक रूप में समझते हैं। परमपिता परमेश्वर, उनके पुत्र ईसा मसीह और पवित्र आत्मा। ईसा मसीह स्वयं ईश्वर के पुत्र थे जो सभी मनुष्यों को पाप व मृत्यु से बचाने के लिए अवतरित हुए थे। ईसा मसीह परमेश्वर थे। यहीं ईसाई धर्म के जीवन का आधार हैं। परमेश्वर जो पवित्र एक देह का रूप धारण किया। हमारे पापों की सजा ईसा मसीह ने अपनी जान देकर चुकायी ताकि मनुश्य बच सके।

भारतीय कला में ईसाई धर्म विषयक चित्र

भारत एक धर्म प्रधान देश है। भारत भूमि चार प्रमुख धर्म, हिन्दू, बौद्ध, जैन, सिक्ख की जन्मस्थली है। भारत की भूमि पर सभी धर्मों का स्वागत है। हिन्दू, बौद्ध, सिक्ख, जैन धर्मों के साथ–साथ ईसाई

धर्म के प्रचार का माध्यम भी भारतीय कलाएँ ही रही। भारत में मुगलों के आगमन के साथ ही कला एवं कलाकार का आगमन भी प्रारम्भ हो गया था। कला के क्षेत्र में ईसाई विषयक चित्रों का अंकन स्थापत्य कला, मूर्ति कला व चित्रकला की नवीन विधाओं में देखने को मिलता है। मुसलमान द्याासक ईसाई धर्म के प्रति सहि?णु थे। अकबर ने अपने दरबार में सभी धर्मों की विशेषताओं का संश्लेषण कर एक नयी विचार धारा को जन्म दिया। दीन–ए–इलाही धर्म। अकबर के समय की कला में ईरानी कला के साथ ईसाई कला का समन्वय भी देखने को मिलता है, जो बसावन द्वारा 'मैड़ोना और द चाइल्ड' में देखने को मिलता है। अकबर व जहाँगीर के ईसाई कला के प्रति प्रेम का अन्दाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि उन्होंने अपने महल की दीवारों व छतों पर ईसाई विषयक चित्र अंकित किये थे। इस प्रकार मुगल शासकों ने सर्वप्रथम भारतीय ईसाई विषयक कृतियों से अवगत कराया।

भारत में आधुनिक कला का प्रारम्भ बंगाल स्कूल से माना जाता है। राजा रवि वर्मा अपने चित्रों में पाश्चात्य पद्धति को लेकर आये। लेकिन उनके अग्रिम अनेक कलाकारों की कतिपय कृतियों में ईसाई धर्म विषयक चित्र भी बने हैं, जिनमें नन्दलाल बोस, अवनीन्द्रनाथ टैगोर, रविन्द्रनाथ टैगोर प्रमुख हैं। आगे आने वाले अनेक कलाकारों की कृतियों में हमें ईसाई धर्म चित्रों के दर्शन होते हैं। यथा– के.सी.एस. पन्निकर, निखिल विश्वास, सुदीप राय, अंजलि इला मेनन, माधवी पारेख। आज के समसामयिक युग में तो ईसा हिन्दू धर्म के श्रीकृष्ण के समान कलाकारों के प्रिय विषय बन गये हैं, जिन्हें अनेक कलाकार समय–समय पर अपनी कृतियों में स्थान देते रहते हैं।

यामिनी राय की कला में ईसाई विषयक चित्र

यामिनी राय ऐसे कलाकार हैं जो भारतीय जड़ों से जुड़े हुए हैं। इनकी विशेषता यह है कि इन्होंने लोकतत्व से मिश्रित आधुनिक कला में कार्य किया है। इनकी कला में हमें माटी की गंध के साथ अभिव्यक्ति की प्रमुखता दिखाई देती है। ये एक ऐसे कलाकार हैं, जिन्होंने अनेक भारतीय विषयों पर अपनी तूलिका चलाई है, लेकिन अगर हम ध्यान से देखें तो उन्होंने ईसाई विषयक चित्रों को प्रभावशाली ढंग से बनाया है। उनकी ईसाई धर्म से सम्प्रक्त कला चित्र ही मेरे प्रस्तुत शोध–पत्र की विषय–वस्तु है।

यामिनी राय का जन्म 15 अप्रैल, 1887 ई.[2] को पं. बंगाल के बाँकुरा की लाल जमीन के उस इलाके में हुआ जहाँ कला संस्कृति जीवन में रची–बसी हुई थी। वह एक छोटे से जमींदार परिवार में पैदा हुई थी। इनके पिता रामरतन राय जो एक कला शिल्पी थे, विरासत में मिले शिल्प प्रेम ने यामिनी राय को कलाकार के रूप में परिवर्तित कर दिया। कलकत्ता के गवर्नमेण्ट कॉलेज ऑफ आर्ट में बाकायदा उनका प्रशिक्षण हुआ[3] जिसके प्रधानाचार्य पर्सी ब्राउन थे जो उनके प्रमुख प्रेरणा स्रोत थे। पर्सी ब्राउन ने यामिनी राय के शैक्षणिक प्रशिक्षण में चित्रकारी में विभिन्न तकनीकों से अवगत कराया। अब वह परिचय की अकादमिक कला में माहिर थे पर उनकी शैली न अकादमिक थी न ओरिएन्टल। उन्हें प्रारम्भ से ही नकल करने की प्रवृत्ति व यूरोपियन तरीकों से नफरत थी। यामिनी राय ने दृश्य चित्रण भी किये, लेकिन बाद में तैल रंगों के स्थान पर जल रंगों ने ले लिया। उन्होंने कला में प्रयोग पर प्रयोग किये। उन्होंने भगवान बुद्ध को भी चीनी ढंग से बनाया। कला जगत को सार्थक अभिव्यक्ति देने की चाहत ने उन्हें कुछ निजी आविष्कारों के लिए प्रेरित किया था। उन्होंने बंगाल शैली से सर्वथा भिन्न शैली में कार्य किया। उस समय बंगाल स्कूल में अवनीन्द्रनाथ टैगोर के नक्शे कदम पर चलने में सभी कलाकार गर्व का अनुभव

करते थे, तब यामिनी राय ने अपनी रचनात्मक दूरदर्शिता एवं स्वतन्त्र मेधा के दम पर एक नयी कल का सूत्रपात किया। चौंतीस साल की उम्र में अचानक उन्होंने निर्णय लिया कि वे अपने प्रदेश की लोक परम्परा से अपनी कला को जोड़ेंगे। यामिनी राय ने अपने चित्रों में लोक कला के साथ यूरोपियन विषयों का सुन्दर सम्मेलन किया है। इनके द्वारा बनाये गये चित्रों की संख्या बहुत है। इन्होंने ईसाई विषयों के द्वारा भारतीय कला को नवीन आकर्षण प्रदान किया। ईसाई विषयक कला इस बात का सशक्त प्रमाण है कि परम्परा का अर्थ अनुकरण नहीं, बल्कि नया संकल्प है, जो युग परिवर्तन के साथ नए–नए रूप में परिवर्तित होता रहता है। आज भी अनेक चित्रकार हैं जो ईसाई धर्म विषयक चित्रों को अपनी प्रिय वस्तु के रूप में सृजित कर रहे हैं। ऐसे कलाकार जो अपनी रचनात्मकता एवं कल्पनाशीलता से अपनी कला विरासत को सदैव समकालीन करते जाते हैं। ऐसे ही कलाकार यामिनी राय ने रामायण से लेकर यीशु के जीवन आदि तक की कला को धर्म के साथ भारतीय कला में विविधता से चित्रित किया है। सन् 1930 ई. से 1935 ई. तक उन्होंने संथाल स्त्रियों के चित्र बनाये। सन् 1937 ई. के बाद उन्होंने चार वर्षों के लिए अपनी तूलिका से ईसाई विषयों को चित्रित किया। लेकिन भारतीय रंग व रेखा की परम्परा में[4] यामिनी राय ने अपने चित्रों में ईसाई विषयों का भारतीयकरण किया। उनके प्रमुख चित्र हैं– ईसा का व्यक्ति चित्र, जीसस क्राइस्ट, मैरी एण्ड जीसस, लास्ट सपर, जीसस की मृत्यु, क्रूसिफिकेशन आदि।[5] उन्होंने ईसाई धर्म की पौराणिकता से जुड़ी कहानियों को इस तरह से प्रस्तुत किया कि वह साधारण से साधारण व्यक्ति को भी सरलता से समझ में आ सकती थी। उनके क्राइस्ट के चित्रों में लम्बी बाहर निकली हुई आँखों पर जैन शैली का प्रभाव दिखाई पड़ता है। मोटे तौर पर उनकी पेण्टिंग्स में देशज लोककला की पारम्परिक विशेषताएँ दिखाई देती हैं। उन्होंने ईसाई विषयक चित्रों की पृष्ठभूमि पर काजल की रेखाओं से कार्य किया व कुशल अभिरूचि के सहारे उभारों का अंकन किया। उभार का यह चित्रण तलों के उपयोग में नहीं, वरन् प्रवाहमान रेखाओं के चाक्षुस प्रयोग के सहारे किया, जिसमें यामिनी राय ने भारतीय कला जगत को नया आयाम दिया। यद्यपि उन्होंने बाइबिल स्वयं नहीं पढ़ी फिर भी ईसा के जीवन को सूक्ष्मता से उकेरा है। अगर हम ईसा के चित्रों का अध्ययन करें तो यामिनी राय एक ऐसे चित्रकार हैं, जिन्होंने ईसा के हर रूप को उकेरा है। बाल रूप से लेकर ईसा का सूली से उतर जाना चित्रों का विवरण निम्नवत् है–

मैरी एण्ड जीसस (चित्र सं. 1) नामक चित्र में यामिनी राय ने 'वर्जिन मैरी एण्ड चाइल्ड जीसस' को दिखाया है। चित्र में मैरी जीसस को धड़ भाग तक विशाल रूप में सरलीकृत रेखा रूप द्वारा सृजित किया है। माँ मेरी का दांया हाथ आशीर्वाद का मुद्रा में है। माँ मेरी की अधखुले नेत्र प्रेम एवं ममता का परिचायक है। चित्रकार ने मैरी के मुखमण्डल को प्रभावित करने हेतु केन्द्र में स्थित कर उनके चारों ओर हल्की नीली, भूरी रंग योजना द्वारा प्रभावित प्रदान की है। सृदृढ़ रेखाओं द्वारा बना यह चित्र बहुत आकर्षक हैं।

एक अन्य चित्र 'हैड आफ दा क्राइस्ट' (चित्र सं. 2) में कलाकार ने ईसा का व्यक्ति चित्र बनाया है, जिसमें सपाट रंग भरे हुए हैं। पृष्ठभूमि में ईंट जैसा भूरा रंग है। आँखों पर लोकशैली का प्रभाव है। आँखें योगी जैसी है, जो उनके आलौकिक प्रभाव को दर्शाती है। चित्र को देखकर दर्शक एक आलौकिक प्रभाव को महसूस करता है।

ईसाई विषयक चित्रों का एक उदाहरण 'लास्ट सपर' (चित्र सं. 3) है। यामिनी राय का 'ईसा का अन्तिम भोज' अनेक यूरोपिय चित्रकारों का एक प्रिय विषय रहा है। फिर भी यामिनी राय द्वारा 'लास्ट सपर' एक अद्‌भुत कृति है। लास्ट सपर को यामिनी राय ने भारतीय शैली में बनाया जहाँ यीशु मसीह अपने शिष्यों के साथ एक अन्तिम भोज साझा कर रहे हैं। राय ने इस विषयों को कई संस्करणों में चित्रित किया। चित्र में शिष्यों की संख्या दस से बारह तक भिन्न होती है। इस चित्र में यामिनी राय ने भोजन व पेय के साथ व्यवस्थित यीशु और उनके आस–पास के दस शिष्यों को चित्रित किया है। बोल्ड लाइंस, फ्लू रंगों का सपाट उपयोग किया, हालांकि रचना, वेशभूषा और हाथ के ईशारे पर बाइजेन्टाइन का प्रभाव है।

इसी प्रकार **ईसाई विषयक चित्र 'जीसस क्राइस्ट' (चित्र सं. 4) में** यामिनी राय ने ईसा को सूली पर चढ़े दिखाया है, जिसमें एक चौड़े क्रॉस के ऊपर ईसा खड़े हैं, जिनका धड़ भाग उद्यो भाग से बड़ा है जो चित्रकार की निजी षैली का परिचायक है। ईसा के पैरों के दोनों ओर पुष्प बने हैं। सूली पर चढ़े होने के कारण चित्रकार ने ईसा के दोनों हथेलियों को खून से रंगे लाल रंग से बनाया है। सूली पर चढ़े होने पर भी ईसा के मुखमण्डल में तेज अद्वितीय है। चित्र के तीन ओर आयताकार रूपाकारों द्वारा बार्डर (सीमा रेखा) बनाई गयी है। नीचे की ओर मछलियों का सुन्दर अलंकरण है।

एक अन्य चित्र 'जीसस विद क्रॉस' (चित्र सं. 5) है जो टेम्परा शैली में बना है, (धूमी माल गैलरी, दिल्ली में संग्रहित है) जिसमें ईसा को क्रॉस को हाथ में पकड़े दिखाया है। चित्र में ईसा की आँखों पर भारतीय लोक कला के अनुसार आँख लम्बी कान से निकली हुई है। चित्र की रंग योजना मोजाईक चित्रों के समान हैं, जो प्रथम दृष्टि में मोजाईक चित्र प्रतीक होती है। ईसा की आकृति भी भारतीय लोक कला के अनुसार है। ईसा सफेद रंग की दोहरी रेखाओं द्वारा बना क्रॉस को तिरछा पकड़े हुए है।

क्रूसिफ़िक्शन (चित्र सं. 6) नामक एक अन्य चित्र में यामिनी राय ने यीशु मसीह के जीवन के चारों ओर घूमने वाली अपनी सबसे षक्तिषाली श्रृंखला में क्रूसिफ़िक्शन को विभिन्न सामग्रियों के साथ कई संस्करणों में चित्रित किया। जीसस क्राइस्ट के जीवन को दर्शाने वाली उनके साहसिक प्रयोगों में से एक थी। मसीह के चित्रों की भाषा उल्लेखनीय है। राय ने इसमें नारंगी रंग के ब्रश के साथ पेण्टिंग के नीचले दांये कोने में बंगाली में अपने हस्ताक्षर किये। इसका आयाम 66.5×68.5 सेमी है। इस चित्र में राय ने यीशु की मृत्यु व पुनरुत्थान का रहस्योद्‌घाटन किया है कि सफलता और जीत का क्या मतलब है। यहाँ क्रॉस को लेन–देन के बदले में दिया क्योंकि मानवता के लिए यह परिवर्तनकारी संदेश है।

एक अन्य ईसाई विषयक चित्र क्राइस्ट विद् डिसपाइल्स (चित्र सं. 7) में ईसा को सूली से उतार दिया गया। चित्र में उनके अनुयायियों ने ईसा को गोदी में ले रखा है। शिष्यों की गोद में बेजान से लेटे ईसा के नेत्र खुले हैं तथा उन्होंने मात्र उधो वस्त्र धारण किया हुआ है।

यामिनी राय के ईसाई सम्बन्धित चित्रों का मूल्यांकन

भारत में किसी भी कलाकार ने भारतीय कला के प्रति अपने ऋण को चुकता नहीं किया, जितना यामिनी राय ने किया। यामिनी राय ने महात्मा ईसा को पूर्ण भारतीयकरण करके प्रस्तुत किया। माथे पर चन्दन का टीका भी लगाया। यामिनी राय का सरल स्वभाव व धार्मिक रूचि, साहसिक प्रयोग व लोक कला के प्रति प्रेम उनके चित्रों में दिखाई पड़ते हैं। यामिनी राय एक सच्चे अर्थ में भारतीय कलाकार है।

फ्रांसीसी कला समीक्षक ए हर्वो मेस्यां ने उनकी तुलना हेनरी मातिस से की। महात्मा गाँधी ने यामिनी ckcwd ks'jk'Vªkhd ykdkj * dhl ¼knhA[6] यामिनी राय ने प्रभु यीशु का भारतीयकरण करके अपनी मौलिक प्रतिभा का परिचय दिया। कला पारखी विष्णु डे ने लिखा है, ''चित्रों में उभार दिखाने और आकारों को मूर्ति करने की दृष्टि से यामिनी राय ने दर्शकों को कभी नहीं उलझाया।[7]

यामिनी राय ने भारत कला में सृजित ईसाई धर्म विषयक चित्रों का सौन्दर्यात्मक विश्लेषण

यामिनी राय ने आधुनिक भारतीय कला के सिद्धान्तों पर प्रभु ईसा मसीह के चित्रों की रचना की। लम्बी चपटी आँखें, सरसराती बहुत मोटी–मोटी रेखायें, देशी रंग इनके चित्रों की विशेषता थी। यामिनी राय के ईसाई विषयक चित्रों में सपाट हमवार रंगों को भरा गया। इनके रंग ठंडी रंग योजना के हिस्से होते थे। रेखायें मोटी एवं स्वच्छन्द होती थी। संयोजन में शीतलता है। विषय वस्तु सरल है। प्रभाव देकर यामिनी राय के ईसा अपनत्व से भरे लगते हैं। चित्रों के हाशिये में बनी सज्जात्मक पट्टियाँ भी ईसा का भारतीयकरण करती हैं।

उपसंहार

सार रूप में, यामिनी राय ने ईसा मसीह और उनके जीवन पर अनेक चित्र बनाये जिसका अभी तक शोध परक अध्ययन नहीं हुआ। अतः मैंने यह शोध पत्र लिखा है। लोक रंग में बने ईसा पूर्णतया भारतीय लगते हैं। ऐसा लगता है जैसा कि हम ईसा को भारतीय रूप में देख रहे हैं, जबकि ईसा पाश्चात्य है। यामिनी राय ने प्रभु यीशु को एक विदेशी संस्कृति से पश्चिमी बंगाली संथाली आत्मा में स्थान्तरित किया है और यीशु की आँखें बादामी हैं। संथाली कपड़े पहनती हैं और एक क्रॉस रखती हैं। भारतीय सादगी, रेखा, रूप, रंगों में रची–बसी ये ईसाई विषयक कृतियाँ किसी भी दर्षक का ध्यान अपनी ओर आकृष्ट करने में सक्षम हैं।

सन्दर्भ ग्रंथ

1. शुक्ल, प्रो. रामचन्द्र, *आधुनिक चित्र कला,* इलाहाबाद, साहित्य संगम, संस्करण प्रथम, वर्ष 2006, पृ0 **130**
2. भारद्वाज, विनोद (सम्पादक)– *आधुनिक कला कोष,* सचिन प्रकाषन, वर्ष 1989, पृ0 **136**
3. अग्रवाल, आर.ए.– *कलाविलास,* मेरठ, लोयल बुक डिपो, 1999, पृ0 **187**
4. वही, पृ0 **188**
5. वाजपेयी, डॉ. राजेन्द्र– *मॉडर्न आर्ट और भारतीय चित्रकार,* कानपुर, साहित्य निकेतन, प्रथम संस्करण, वर्श 1981, पृ0 **67**
6. प्रताप, डॉ. रीता– *भारतीय चित्रकला एवं मूर्तिकला का इतिहास,* जयपुर : राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, सोलहवाँ संस्करण, वर्ष 2014, पृ0 **342**
7. वही, पृ0. **342**
8. अषोक कला, *सौन्दर्य और समीक्षाशास्त्र,* अलीगढ़ : ललित कला प्रकाशन, वर्ष अलिखित।
8. भागो, प्राणनाथ– *भारत की समकालीन कला,* नई दित्ल्ली : नेशनल बुक ट्रस्ट इंडिया, प्रथम संस्करण, वर्ष 2006

मैरी एंड जीसस (चित्र संख्या - 1)

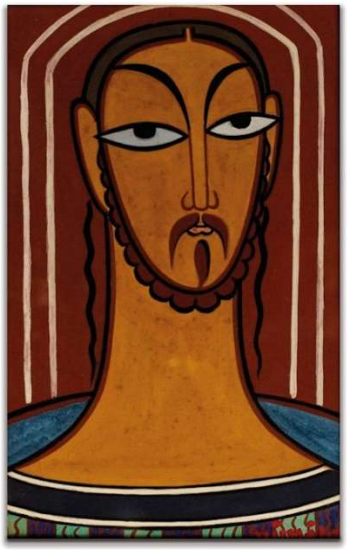

हेड ऑफ़ दा क्राइस्ट (चित्र संख्या - 2)

लास्ट सपर (चित्र संख्या - 3)

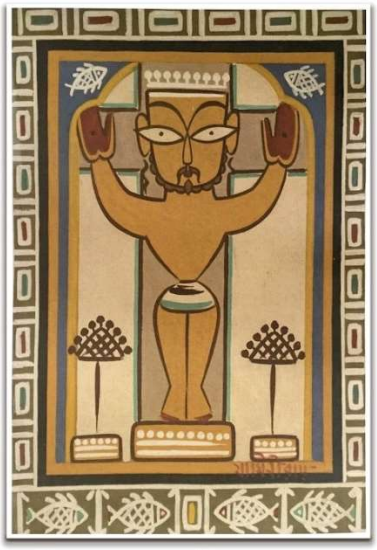

जीसस क्राइस्ट (चित्र संख्या - 4)

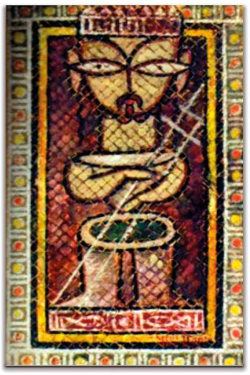

जीसस विद दा क्रॉस (चित्र संख्या - 5)

क्रूसिफ़िक्शन चित्र (संख्या - 6)

क्राइस्ट विद ड़िसपाइल्स (चित्र संख्या - 7)